पंचम दीक्षांत समारोह जे.सी. बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, फरीदाबाद

21.08.2024

1. भारत की सम्मानित राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जी,
2. प्रो. सुशील कुमार तोमर जी, कुलपति, जे.सी. बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
3.
4.

उपस्थित विश्वविद्यालय संसद, कार्य परिषद् एवं शिक्षा परिषद् के सम्मानित सदस्यगण, संकायाध्यक्ष, विभागाध्यक्ष एवं संकाय सदस्यगण, उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थीगण, कर्मचारीगण, प्रेस के सदस्यगण, देवियों और सज्जनों।

1. भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जी की गरिमामयी उपस्थिति में आयोजित जे.सी. बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, वाईएमसीए, फरीदाबाद के पंचम दीक्षांत समारोह में उपस्थित होकर मैं गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं।
2. माननीय राष्ट्रपति जी, आपकी उपस्थिति ने इस समारोह को भव्यता और गरिमा प्रदान की है। हरियाणा प्रदेश के प्रथम नागरिक एवं इस विश्वविद्यालय के कुलाधिपति के नाते मैं आपका हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन करता हूं।
3. मैं माननीय राष्ट्रपति जी का हृदय से कृतज्ञ हूं। उन्होंने अपनी उपस्थिति से छात्रों का उत्साहवर्धन किया है।

4. दीक्षांत समारोह का आयोजन किसी भी विश्वविद्यालय तथा उपाधियों से विभूषित होने वाले छात्रों के लिए भी गौरव का क्षण होता है। मैं विश्वविद्यालय के इस प्रयास की सराहना करता हूं।
5. भारत में 'दीक्षांत समारोह' की परम्परा भी सदियों पुरानी है। 'उपनिषदों' में भी इस गौरवशाली परम्परा का उल्लेख है। इस अवसर पर गुरू अपने शिष्य को सत्य बोलने, कर्तव्य का पालन करने और स्वाध्याय में आलस्य नहीं करने की दीक्षा देते थे।
6. मुझे बताया गया है कि इस दीक्षांत समारोह में पंद्रह सौ छत्तीस स्नातकों तथा तेरह शोधार्थियों को उपाधियों से अलंकृत किया जा रहा है, जिसमें छः सौ

बासठ छात्राएं और आठ महिला शोधार्थी शामिल हैं। यह हरियाणा प्रदेश की बेटियों का उच्च शिक्षा क्षेत्र में बढ़ते रूझान को दर्शाता है। शोध क्षेत्र में तो हमारी बेटियों ने बेटों को पीछे छोड़ दिया है।

7. मुझे प्रसन्नता है कि हरियाणा की बेटियां आज हर क्षेत्र में अपना नाम रोशन कर रही है। अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, खेल, अभिनय और राजनीति जैसे क्षेत्रों में तो हरियाणा की बेटियों ने पहले ही अपनी पहचान बनाई है।
8. इस अवसर पर उपाधि ग्रहण करने वाले प्रौद्योगिकीय स्नातकों से कहना चाहूंगा कि देश को प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विश्व

पटल पर उच्च स्तर पर प्रतिष्ठित करने का दायित्व आप जैसे युवाओं पर है।

9. मैं हमेशा युवाओं से कहता हूं कि, दीक्षा का अंत हो सकता है, लेकिन शिक्षा का कोई अंत नही। शिक्षा निरंतर जारी रहनी चाहिये।
10. इसलिए मेरे युवा साथियों, आपको शोध एवं अन्वेषण के नये प्रकल्पों को बढ़ावा देना होगा। आपको नई उभरती प्रौद्योगिकी जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, रोबोटिक्स, क्वांटम कंप्यूटिंग, वर्चुअल रियलिटी, साइबर सिक्योरिटी और इंटरनेट ऑफ थिंग्स के क्षेत्रों में आगे आना होगा ताकि हमारा देश वैश्विक चुनौतियों का मजबूती से सामना कर सके।

प्यारे विद्यार्थियों

11. आज भारत दुनिया का सबसे बड़ा युवा जनसंख्या का देश बन कर उभरा है। भारत के पास संपूर्ण विश्व जनशक्ति को आवश्यकता आपूर्ति करने की क्षमता है। देश के युवाओं की क्षमताओं का ध्यान रखते हुए आजादी के इस अमृतकाल में देश ने वर्ष 2047 तक 'विकसित भारत' का संकल्प लिया है। इस संकल्प को सिद्ध करने के लिए युवाओं को अपनी भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी।

12. हरियाणा एक प्रतिभावान संपन्न राज्य है, जहां के युवा देश-विदेश में परचम लहरा रहे है। किन्तु आज आवश्यकता उच्च शिक्षा को रोजगारपरक के साथ-

साथ उद्यमशीलता के अनुरूप बनाने की है ताकि हमारे युवा कौशलवान बने और देश की आर्थिक उन्नति में योगदान देने में सक्षम बने।

13. देश में इक्कीस वीं सदी की जरूरतों के अनुरूप शिक्षा प्रणाली में बदलाव लाने के लिए ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में एक समावेशी चिरस्थायी एवं प्रेरक दृष्टिकोण अपनाया गया है। यह नीति रोजगार क्षमता से उद्यमिता की ओर ले जाने वाली है जो नौकरियां चाहने वालों की बजाय नौकरी पैदा करने वालों को आगे बढ़ावा देने का प्रयास है। भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए इस शिक्षा नीति और शिक्षण संस्थानों की भूमिका अहम होगी।

14. केन्द्र ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत लक्षित परिणामों को वर्ष 2030 तक हासिल कर लेने की समय अवधि निर्धारित की है। मुझे बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि हरियाणा राज्य ने इस दिशा में पहल करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति को वर्ष 2025 तक पूर्ण रूप से लागू करने का संकल्प लिया है।
15. आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि इस संकल्प को सिद्ध करने की जिम्मेदारी लेते हुए प्रदेश के उच्च शिक्षण संस्थानों ने प्रतिबद्धता दिखाई है। प्रदेश के सरकारी विश्वविद्यालयों द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के प्रावधानों को शैक्षणिक सत्र 2023-24 से चरणबद्ध रूप से लागू करने की

पहल की गई है। ऐसा गत बारह व तेरह अगस्त को राजभवन चंडीगढ में आयोजित दो दिवसीय कुपतियों व कुलसचिवों की कॉनफ्रैंस में प्रस्तुत रिपोर्ट में दिखाई दिया।

16. उन्नीस सौ उनहत्तर में इंडो-जर्मन परियोजना के अंतर्गत स्थापित इस संस्थान ने प्रगतिशील भारत की युवा शक्ति को कौशलवान तथा उद्यमशील बनाया तथा फरीदाबाद शहर के साथ-साथ राज्य व देश की आर्थिक उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
17. इस विश्वविद्यालय का कुलाधिपति होने के नाते मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र आज उद्योग जगत में महत्वपूर्ण

भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं और देश के प्रौद्योगिकीय एवं आर्थिक विकास में अपना योगदान दे रहे हैं।

18. महान वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बोस के नाम पर इस संस्थान का नामकरण दूरदर्शी एवं सराहनीय पहल है। आधुनिक विज्ञान एवं बहुविषयी (MULTIDISCIPLINARY) प्रौद्योगिकी में जगदीश चन्द्र बोस का योगदान अतुलनीय रहा है।

19. रेडियो, टेलीविजन, रिमोट सेन्सिग, रडार, माइक्रोवेव अवन और इंटरनेट से लेकर आधुनिक 5जी प्रौद्योगिकी जे.सी. बोस की अनुसंधान प्रवृत्ति का नतीजा है, जिसकी परिकल्पना उन्होंने आज से एक सौ बीस साल पहले कर ली थी।

20. ऐसे महान वैज्ञानिक के नाम पर इस विश्वविद्यालय का नामकरण निश्चित रूप से इसे वैश्विक पहचान दिलायेगा। मुझे जानकर आनंद की अनुभूति हुई कि विश्वविद्यालय ने बीते वर्षों में अकादमिक एवं ढांचागत विकास के नये कीर्तिमान स्थापित किये है।
21. यह प्रशंसनीय है कि यह विश्वविद्यालय द्वारा ढांचागत और शैक्षणिक विस्तार के साथ-साथ मौलिक शोध, नवाचार और उद्यमिता को प्रोत्साहन देने के लिए सुविचारित प्रयास कर रहा हैं।
22. इक्कीस वीं सदी के विश्वविद्यालयों से यह अपेक्षा की जाती है कि यहां के विद्यार्थी और प्राध्यापक इस सदी की जरूरतों को पूरा करने और चुनौतियों

का सामना करने में सक्षम सिद्ध होंगे। मुझे पूरा विश्वास है कि आप सभी इन अपेक्षाओं पर खरे उतरेंगे।

23. मैं डिग्री एवं पुरस्कार पाने वाले सभी विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए हार्दिक बधाई देता हूं और दीक्षांत समारोह के सफल आयोजिन के लिए जे.सी. बोस विश्वविद्यालय परिवार को भी बधाई देता हूं।

24. इस समारोह की शोभा बढ़ाने के लिए मैं पुनः भारत की माननीय राष्ट्रपति जी का आभार व्यक्त करता हूं।

जय हिन्द!

मुख्य बिंदु

- उन्नीस सौ उनहत्तर में इंडो-जर्मन परियोजना के अंतर्गत इस संस्थान की स्थापना हुई।
- इस दीक्षांत समारोह में पंद्रह सौ छत्तीस स्नातकों तथा तेरह शोधार्थियों को उपाधियों से अलंकृत किया जा रहा है
- जिसमें छः सौ बासठ छात्राएं और आठ महिला शोधार्थी शामिल हैं।